Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

मानव सभ्यता में धर्म का महत्त्व

नज़मी गौहर
शोधच्छात्रा संस्कृत विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

डॉ0 देवनारायण पाठक
संस्कृत विभागाध्यक्ष, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 5, Issue 2
Page Number : 69-73

Publication Issue :
March-April-2022

Article History
Accepted : 15 March 2022
Published : 30 March 2022

सारांशः—धर्म विशाल एवं व्यापक है। सभी बातें धर्म में समाहित हैं। धर्म के बिना कुछ भी नही है चाहे वह समाज हो या राष्ट्र। धर्म की आवश्यकता सभी को है। वर्तमान समय में धर्म भावना का अभाव सर्वत्र दिखायी दे रहा है। इसीलिए मानव का पतन होता जा रहा है। लोगों के ह्रयह से ईश्वर का भय खत्म हो गया है इसीलिए अनीति, अनाचार और अनास्था बढ़ते जा रहे हैं। समाज पतन की ओर जा रहा है। अगर उसे बचाना है तो हमें धर्म को आधार बनाना होगा। जिसके द्वारा मानव जीवन के लौकिक तथा अलौकिक पक्षों को एकसूत्र में पिरोकर एक आदर्श समाज में व्यक्ति के अधिकार तथा कर्तव्यों को निरूपित किया जा सकता है।

मुख्य बिन्द :— धर्म, सत्य, अंहिसा, धर्म पारायणता, धर्मशील, धर्माचरण, नैतिकता, वेद।

धर्म शब्द धृ धातु से मन् प्रत्यय लगाकर धर्मन् शब्द बना है जिसका अर्थ है धारण किये जाने वाला या आचरण करने योग्य। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ''धार्यते जनैरिति धर्मः'' मनुष्यों द्वारा जो धारण किया जाए या जिसका आचरण किया जाए वही धर्म है।

महाभारत में भी धर्म को धारण करने वाला बताया है —

''धारणाद् धर्ममिव्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।[1] यत् स्याद् धारण संयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।''

अर्थात् धारण करने के कारण ही धर्म कहलाता है और धर्म प्रजा का धारण करता है जो धारण से संयुक्त है वह धर्म है।

महाभारत में धर्म को श्रेष्ठ माना है क्योंकि धर्म ही है जो मुनष्य को पशुओं से अलग करता है जैसा कि स्पष्ट है —

''आहारनिद्रभयमैथुनञ्च सामान्यमेतत्पशुर्भिनराणाम्।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

धर्मो ही तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।''[2]

अर्थात् आहार निद्रा, भय और मैथुन पशु एवं मनुष्यों में सामान्य है। धर्म ही है जो मनुष्य को श्रेष्ठ बनाता है। धर्म के बिना मनुष्य भी पशु के समान है।

इसके अतिरिक्त ''ध्रियते लोकोऽनेन, धरति लोक' वा इति धर्मः।''[3]

अर्थात् कर्तव्य जाति और सम्प्रदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन, कानून, प्रचलन, प्रथा एवं अध्यादेश और नैतिक गुण ही धर्म है।

मनु ने धर्म को दस विशेषताओं से युक्त बताया है –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।[4]

अर्थात् धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध इन दस बातों का पालन करना ही धर्म है।

इसके अतिरिक्त वे कहते हैं –

''वेदः स्मृतिः सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहृ साक्षात्धर्मस्य लक्षणम्।।''[5]

अर्थात् जो कुछ वेदो एवं स्मृतियों में वर्णित है और सदाचार, तथा चौथे जो स्वयं को उचित लगे वह धर्म है।

पी0एच0 प्रभु के अनुसार ''धर्म निश्चय ही वह सिद्धान्त है, जिसमें सौर ब्रह्माण्ड को सुरक्षित रखने की क्षमता है।''[6]

चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः।''[7] चोदना ही धर्म है। चोदना का अर्थ है वेदप्रतिष्ठित मन्त्रों द्वारा प्रतिपाद्यमान प्रेरणा, जो विधि रूप है।

महर्षि वशिष्ठ के अनुसार– ''श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः''[8] अर्थात् श्रृति एवं स्मृति में विहित आचरण ही धर्म है।

''त्रयो धर्मस्कंधा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति।''[9] अर्थात् धर्म वृक्ष के तीन स्कन्ध यज्ञ, अध्ययन और दान।

तैत्तिरीयोपषिद में धर्म के विषय में प्रमाद नही करने को कहा गया है– ''धर्मान्न प्रमदितव्यम्''[10]

कणाद के अनुसार – ''यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः''।[11]

अर्थात् जिससे अभ्युदय और निश्रेस की सिद्धि हो वह धर्म है।

''य एवं श्रेयस्करः स एव धर्मधब्देनोच्यते।''[12] अर्थात् जो कुछ श्रेयस्कर है वही धर्म है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि धर्म–लौकिक एवं सामाजिक कर्तव्य, किसी व्यक्ति या पदार्थ के मूलभूत गुण, व्यावहारिक एवं नैतिक, नियम, ईश्वरीय उपासना, पूजापाठ आदि है।

धर्म समाज एवं संस्कृति का मूल आधार है। इसी मूल आधार पर संसार का कल्याण आधारित है। धर्म का स्वरूप सार्वभौम है इसी कारण विश्व का धर्म एक ही है। परन्तु धर्म को जानने के लिए जो अलग–2

पद्धतियाँ बनाई गयी, उसे ही लोग धर्म समझने लगे है जबकि वह सम्प्रदाय है। धर्म अगम है, अथाह है, महासार है और सम्प्रदाय सरितावत् है। धर्म महासागर में अनेक सरितावत् सम्प्रदायें आकर समाहित हो जाते हैं।

ईश्वर में आस्था एवं विश्वास और विश्वास भी ऐसा जो सभी प्राणियों के प्रति प्रेम एवं आत्मीयता की भावना पैदा करता हो, जो संसार को एकता के सूत्र में बाँधता हो वह धर्मपरायणता है। धर्म पारायण मनुष्य साम्प्रदायिकता एवं मतभेद से दूर रहता है। वह सम्पूर्ण समाज को अपना समझाता है। और सबको अपना बंधु समझता है। वह जन कल्याण को पूजा मानता है। यही धर्म का सच्चा अर्थ है।

एकता, ममता, सहिष्णुता और शुचिता ही धर्म का लक्ष्य है और धर्म की गरिमा इसी तथ्य पर अवलम्बित है।

इस प्रकार हम कह सकत हैं कि धर्म के सच्चे स्वरूप को जान लेने पर और शाश्वत सिद्धान्तो को जीवन में अपनाने पर ही मनुष्य का उद्धार हो सकता है।

धर्म का बहुत महत्त्व है। संसार में धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है श्रुति का कथन है –

''धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा, लोके धार्मिष्ठ प्रजा उपसर्पन्ति।
धर्मेण पापमपनुदति, धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद् धर्मं परमं वर्दान्त।।''[13]

अर्थात् धर्म सम्पूर्ण संसार की प्रतिष्ठा है। संसार में लोग धर्मशील के ही पास जाते हैं। धर्माचरण से पाप दूर होते हैं। धर्म पर सब कुछ आधारित है। धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है।

धर्म की महिमा का वर्णन स्कन्दपुराण में भी प्राप्त होता है। स्कन्दपुराण में बताया गया है कि जिसमें धर्म की रक्षा कर ली उसने सब कुछ कर दिया। फिर कोई कमी नही रही। उसने तीनों लोकों की रक्षा कर ली। अतः धर्म की रक्षा ही सर्व रक्षा है क्योंकि धर्म मुख्य होता है। यथा –

''धर्मो हि रक्षितो येन देहे सत्वरगत्वरे।
त्रैलोक्यं रक्षितं येन किं कामार्थैः सुरक्षितैः।।''[14]

धर्म के महत्त्व को समझने के लिए बाल्मीकि के जीवन का उदाहरण अत्यन्त मार्मिक है। जैसा कि हम सभी जानते है कि बाल्मीकि अपने युवा अवस्था मे एक दस्यु थे। अपनी पत्नि एवं पुत्र के जीव–यापन के लिए वे लोगों की हत्याएं करते थे एवं उनके पास जो कुछ भी रहता था वो छीन लेते थे। एक बार उनकी मुलाकात नारद मुनि से हुई। बाल्मीकि ने नारद मुनि से कहा तुम्हारे पास जो कुछ भी है मुझे दे दो वरन् मैं तुम्हारी हत्या कर दूँगा। नारद मुनि ने कहा जो तुम यह पाप कर रहे हो क्या इसमें तुम्हारे पत्नि एवं पुत्र भागीदार होंगे। यह सुनकर वे स्तम्भ रह गये और घर जाकर उनसे पूछा तो उनका उत्तर सुनकर वे बहुत दुःखी हुए क्योंकि उन्होंने पाप में शामिल होना से मना कर दिया था। घर से आने के बाद उनके विचार बदल गए एवं नारद मुन ने भी समझाया और उनके समझ में आ गया। वे सोचने लगे जिसके लिए मैं पाप कर रहा हूँ वे मेरे पाप में भागी नही होंगे, दूसरे मैं लोगों की हत्याएं कर रहा हूँ यह वृत्ति भी बुरी है। ऐसा कार्य जिससे लोगों को दुःख हो वह

कार्य धर्म नही अपितु अन्याय है यह धर्मतत्त्व जब उनके हृदय में उत्पन्न हुई तब से उनका जीवन ही बदल गया। वे दस्यु से महर्षि हो गये। धर्म की कितनी बड़ी महिमा है। आज उनको धर्म प्रवर्तक के रूप में माना जाता है।

इसीलिए कहा गया है कि मनुष्य का पुनीत कर्तव्य है कि वह इस दुर्लभ मनुष्य जन्म को प्राप्त करके सदा धर्माचरण पर ही चले। यथा – ''तस्माद्धर्मः सदा कार्यो मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम्।''[15] वह व्यक्ति श्रेष्ठ होता है जो धर्म का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर उसका आचरण करता है। इस प्रकार आचरण करने वाला व्यक्ति सच्चा धार्मिक होता है वह संसार में श्रेष्ठतम तथा यशस्वी व्यक्ति होता है। उसे सब मानते हैं और अन्त में वह स्वर्ग जाता है।

वसिष्ठ धर्मसूत्र का कथन है – ''ज्ञात्वा चानुतिष्ठन् धार्मिकः प्रशस्यतमों भवति लोके प्रेत्य च स्वर्गलोकं समश्नुते।।''[16]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मनुष्य के सदैव धर्म का पालन करना चाहिए क्योंकि जो धर्म का पालन नहीं कर सकता है उसे सुख कैसे सम्भव हो सकता है क्योंकि धर्माचरण से ही सुख प्राप्त होता है जैसा कहा भी है – ''धर्मेण सुखमासीत्''। धर्म मनुष्य को मनुष्य बनाता है तथा ''वसुधैव कुटुम्बकम् की शिक्षा भी देता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि धर्म का बहुत महत्त्व है सभी धर्मशास्त्र और वेदों में धर्म के बारे में चर्चा हुई है और सभी ने धर्म का बहुत महत्त्व बताया है।

संदर्भ सूची

महाभारत

महाभारत

आप्टे कोश – पृ0 489

मनुस्मृति – 6.12

मनुस्मृति – 2.12

कल्याण, हिन्दु संस्कृति अंक पृ0 370

जैमिनि सूत्र – 1

वशिष्ठ धर्मसूत्र – 1.3

छान्दोग्योपनिषद

तैत्तिरीयोपनिषद्

वैशेषिक दर्शन – 1.2

बलदेव उपाध्याय – वैदिक साहित्य और संस्कृति – पृ0 449

श्रीमन्नारायणोपनिषद – 79

स्कन्द पुराण, काशी खण्ड, 46, 33

वृद्ध गौतम स्मृति – 233

वसिष्ठ धर्मसूत्र – 1.2